अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

कुमाऊनी संस्कृति आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में

डॉ शशि पाण्डे
हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग
डी० एस ० बी ० परिसर नैनीताल

शोध सार -

आज के बहलते परिवेश मे कुमाउनी संस्कृति में यदि परिवर्तन देखने को मिले तो इसमें कोई हानि नही है। बल्कि देखें तो इसमे लाभ अधिक है क्योंकि इससे कुमाऊँ की संस्कृति का प्रचार प्रसार अधिक देखने की को मिलता है कुमाउनी को नई पहचान दिलाने का श्रेय हमारे नये कलाकारो व लोक गायको के साथ साथ हमारे प्रवासी भारतीयों की भी मुख्य भूमिका रही है, जिन्होंने अपनी संस्कृति को पहचाने मे महत्वपूर्ण योगदान दिया है जिन्होंने अपनी संस्कृति का परचमविदेशों मे भी फहराया और यहाँ की संस्कृति में को नई पहचान दिलाई। आज इस्टाग्राम ,वर्रसवप , फेसबुक ब्लाक के माध्यम से चाहे युवा हो बच्चे हो हर उम्र के महिला हो या पुरुष अपनी संस्कृति की रूप मे नए समाज के सामने अपनी संस्कृति का प्रचार प्रसार कर रही है,आधुनिकता का प्रभाव लोकगीतो के अतिरिक्त हमारे पहनावें में भी देखने को मिल रहा है कुमाऊ का प्रसिद्ध रंगोली पिछोड़ा आज सम्पूर्ण विश्व में उसकी पहचान देखने को मिल रही है।. एक नए रुप में देखने को मिल रही है। यहाँ के व्यजनों को देखे म मडुवे के विस्कुट . नमकीन मिठाई मे बाल मिठाई विश्व प्रसिद्ध होती जा रही है, हम चाहे किसी दृष्टि से देखे हमारी संस्कृति प्र आधुनिकता का बढ़ता प्रभाव संस्कृति केविकास का द्योतक है अन्त मे यही कहाँ जा सकता है परिवर्तन जीवन का मूल तत्व है, अर्थात् परिवर्तन से ही हम शिखर पर पहुंच सकते है

बीज शब्द -

आधुनिकता, एस्ट्राग्राम ., वर्डसप, मोबाइल, बालमिठाई , लोकप्रियता स्माइल भूमण्डलीकरण स्मृति ग्रन्थ ,विच्छितिया, आदि

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

संस्कृति ' शब्द अपनी व्यापक व्यवहारिकता के कारण सरल एवं सुबोध सा लगता है, वास्तव में वह उतना सरल है नही , क्योकि यह इसकी अनेक विच्छितिया, मानवीय मनन चिन्तन के अनन्त आयामों विविध उपयोगी एवं ललित कलाओं के अगनिनत उत्कर्ष विन्दुओं, संकल्पनाओं आस्थाओं, विश्वासों, परम्पराओं , जीवनपतियो पूजा-अर्चना, उपासना धार्मिक अनुष्ठानों की औपचारिकताओं तथा अमें निहित परम्परागत भावनाओं के अनेक रूपों प्रति रूपो को स्वयं नेसमाहित किए - हुए होता है। ये लोक संस्कृति केअन्तर्गत आता है, इसमे किसी क्षेत्र विशेष के वर्ग, लोककथाएं ,लोक नृत्य लोकगीत आदि प्रमुख आते है 1

प्रत्येक समाज या राष्ट्र की अपनी एक विशेष संस्कृति होती है जो दूसरे समाज वह राष्ट्र की संस्कृतियों से कुछ-कुछ भिन्न रखते हुए भी उनसे भिन्न होती है2।

कुमाऊं की संस्कृति की अपनी विशिष्ट पहचान है यह पहचान अपने क्षेत्र तक ही नहीं वरन विश्व तक फैली है यहां के तीज त्यौहार लोक नृत्य लोक कला मेले अत्यधिक प्रसिद्ध है जो लोक संस्कृति के परिचायक हैं किसी भी राज्य देश को अपनी अपनी संस्कृति व परंपराओं पर गर्व होता है जो कई परंपराओं को अपने में सिमटे हुए हैं पर आज प्राचीन काल से चली आ रही कुमाऊं की संस्कृति पर भी आधुनिकता का प्रभाव अत्यधिक देखने को मिलता है यह प्रभाव संस्कृति को एक नया रूप दे रही है इससे हमारी संस्कृति में एक नयापन देखने को मिल रहा है हमारी संस्कृति पर भी पाश्चात्य सभ्यता का असर देखने को मिलता है जिससे हम कह सकते हैं कि हमारी संस्कृति पश्चात सभ्यता को अपनाते हुए एक नए रूप में समाज में अवतरित हो रही है वह चाहे हमारे वस्त्र आभूषण हो चाहे खानपान या चाहे हमारे लोकगीत ही क्यों ना हो इन सभी में परिवर्तन दिखाई दे रहा है परिवर्तन जिस तरह प्रकृति में दिखाई देता है इस तरह यह परिवर्तन संस्कृत में भी देखने को मिल रहा है “आज कल कल संस्कृति की बातें करना एक फैशन एथेनिक आर्ट कल्चर हेरिटेज ट्रेडीशनल कॉस्टयूम फोक कल्चर लोक सॉन्ग फोक डांस जैसे शब्दों का प्रयोग फैशन बनता जा रहा है यह शब्द प्रभुता आधुनिकता और सुरुचि के परिचायक बन गए हैं आज लोगों का जीवन पश्चात शैली के प्रति अत्यधिक आकर्षण का केंद्र बनता जा रहा है हर व्यक्ति समय की मांग के अनुसार चल रहा है वह हमारी संस्कृति को आज के दूर के अनुकूल प्रस्तुत कर रहा है यद्यपि लोग उनके नमूने सजा कर अपने सांस्कृतिक

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

प्रेम का विज्ञापन कर रहे हैं हमारी यह विडंबना है की संस्कृति का एक अंश जब हमारे जीवन का एक अंग बनकर हमें सीखना है तब हम उसे है ना समझ कर उसका तिरस्कार कर रहे हैं और वही अंश जब आधुनिकता बनकर अंग्रेजी के नाम के साथ गया या बोला जाता है तो उसे अपने को हम बेचैन होते हैं जिन गीतों को हम गॉड गाढ़ेरों जंगलों के गवनी गीत कहकर त्याग चुके थे वही आज लोक सॉन्ग" 3

फोक सांग, फोकडास , यो फोक म्यूजिक के रंगों में रंग कर कुमाउनी संस्कृति का अंग बन गए है ।

यदि हमें नया कुछ नही मिलता है तो हम पुराने मे ही नया टूढने की कोशिश करते है ' जब वस्ताभूषण व लोकगीतो का प्रचलन पुराना लगने लगे तो हमने परम्परागत घाघरों सरारो को नया रुप देकर आउट आफ डेट हो गए गंवाडी वस्त आभूषणो को पाटियो में विशेष परिधान के रूप में धारण करना शुरू कर दिया है,

श्री के0 एस0 मुंशी का कहना है हमारे रहन सहन के पीछे जोहमारी मानसिक अवस्था, मानसिक प्रकृति है जिसका उदद्देश्य हमारे अपने जीवन को परिष्कृत ., शुद्ध और पवित्र बनाता है तथा अपने लक्ष्य की प्राप्ति करता है, वही संस्कृति है। संस्कृति जीवन के प्रति हमारा दृष्टिकोण है"4।

लोक संस्कृति नित्य जीवन का अमूल्य साहित्य है। लोक साहित्य का आशय यह नहीं है कि उसको ग्रामीण गीतों तक ही सीमित मान लिया जाये 5

डा ० कृष्णदेव उपाध्याय लोक संस्कृति के बारे मे इस प्रकार लिखा है,यर्थाथता से पलायन और किसी मनहूस कार्य क्या खेल तथा प्रशन्नता के रुप में परिणत करना 6 ।

संस्कृति को जानने से पहले हमे संस्कृति के मूल मे जानता आवश्यक है। ' वैदिक साहित्य को आधार मानवर जिस साहित्य की रचना की गयी है उसको बाहमण साहित्य कहा गया है। कुछ धामिन साहित्य बौद्ध और जैन धर्म से भी संबधित है, ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अर्थवेद को संहिता कहा गया है। ' बाहमण अरण्यक उपनिषद ग्रन्थ है ऋवेदिक कालीन संस्कृति को पूर्व वैदिक और बाद के ग्रन्थों में वाणित संस्कृति को उत्तर वैदिक कालीन संस्कृति कहा जाता है"स्मृति ग्रन्थ, पुराण महाकाव्य वेदांत आदि से प्राचीन भारतीय संस्कृति पर व्यापक प्रभाव

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

पड़ा है। हमारी संस्कृति अत्यन्त प्राचीन यानि यू कहे कि संस्कृति का जन्म मनुष्य के जन्म के साथ ही प्रारम्भ माना जा सकता है। इसीलिए हम यह भी कह सकते है कि जिस तरह मनुष्य के जीवन मे परिवर्तन देखने को मिलता उसी भाँति हमारी संस्कृति मे परिवर्तन होना स्वभाविक है

आज के युग में जिसे विज्ञान का युग कहा जाता है संस्कृति को मानव मूल्यया मूल्य दृष्टि के साथ जोड़ देने पर अंतर विरोधी दिखने को मिलता है क्योंकि विज्ञान मूल्य निरपेक्षता या मूल्य से पार होने का दावा करता रहा है लेकिन विज्ञान कभी मूल्य निरपेक्ष नहीं हो सकता और संस्कृति भी कभी उन उन साथियों के प्रति एकांत उदासीन नहीं हो सकती जिनका भौतिक आधार जगत है 7।

आज कुमाऊँ के जिन लोकगीतो लोकप्रियता बढ रही है । उसमें आधुनिकता या अंग्रेजी के शब्दों की भरमार है, इन गीतों में जैसे मोबाइल , स्माइल, हील ., मॉडन विस्लरी , अंग्रेज, टैक्सी, सैडिल ., ब्यूटीफुल आदि शब्दो की भरमार देखने को मिलती है।

एक लोकप्रिय लोकगीत इस प्रकार है जो आजकल प्रचलन मे भी अधिक देखने को मिलताहै, जैसे

बवली तेरों मोबाइल वाह भई तेरी स्माइल

वनि खुटियू मा च ऊँचा हील

बवली तेरु मुबाइल.....8

इस लोक गीत मे मोबाइल स्माइल हील आदि शब्दो का प्रयोग मिलता है. जो आधुनिकता को दर्शाता है।

आज की युवा पीढी को देखे तो सभी अंग्रेजी भाषा का अधिक प्रयोग कर रहे है,इन लोकगीतों की लोकप्रियता का एक कारण यहभी यह नई पीढी कोआसानी से समझ मे आ जाता है और वह अपनी संस्कृति को दिलोजान से अपना रहे है। इस तरह एक लोकगीत इस प्रकार है जिसमें अंग्रेजी केशब्दों की भरमार है

जैसे- अल्मड अग्रेज आयों टैस्सी मे

बन्दूक की कमाना तर झुमका रैगो बक्स में 9

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

इस प्रकार के लोकगीतो का प्रचलन अधिक देखने को मिलता है। आज शादी विवाहमें कुमाउनी गीतों का प्रचलन अधिक बढ रहा है जो हमारी संस्कृति के लिए अच्छी पहल है

भारतीय संस्कृति का जन्म एक भ्रांति से एक भावात्मक भ्रांति से होता है जिसने भारतीय संस्कृति को प्रकृति के बारे में एक ऐसी अवधारणा प्रदान की है जो उसकी अपनी निजी अवधारणा है और प्रकृति की वैदिक अवधारणा ने भारतीय संस्कृति को एक धर्म प्रदान किया है 10

स्थानीय संस्कृति मानव जन्म के साथ ही संस्कृति का जन्म मैन तो गलत नहीं होगा क्योंकि प्राचीन काल में जो संस्कृति थी वह हमें वेशभूषा आभूषण विशेष रूप से उसे समय के देवी देवताओं की मूर्ति से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उसे समय की संस्कृति रही होगी कुमाऊं की संस्कृति भी अत्यंत प्राचीन मानी जा सकती है यहां की संस्कृति पर भी समय-समय पर परिवर्तन के साथ-साथ आधुनिकता का प्रभाव देखने को मिलता है 11

आज जब हम आधुनिकता के दौर में जी रहे हैं चाहे गांव हो या शहर नई पीढ़ी हो या पुरानी सभी बिना मोबाइल के एक पल भी नहीं जी सकते हम सभी मोबाइल के गुलाम होते जा रहे हैं यदि हमारी संस्कृति विश्व में फैल रही है इसका मुख्य कारण मोबाइल व्हाट्सएप इंस्टाग्राम आती है यदि हमारे लोकगीतों में अंग्रेजी शब्दों क्या सम्मिश्र होकर एक नए रूप में युवा कलाकारों द्वारा उनके नृत्य उनकी वेशभूषा में आधुनिकता पुर दिखाई दे रहा है और एक नए रूप में संस्कृति का विकास कर रही हो तो इसमे गलत क्या है। क्योकि यदि हम अपनी संस्कृति को बाजार की मांग के अनुकूल नही जाएगे तो उस का विकास मेंअवरुद्ध हो जाएगा

केशव दत्त वाली ने संस्कृति को दो भागों में बनता है सामान्य वर्ग और अभिजात वर्ग पहले को लोक संस्कृति और दूसरे को अभिजात संस्कृति की संज्ञा दी है सामान्य संस्कृत के अंतर्गत जागर , लोक कथा लोक गाथा लोक नृत्य आदि आती हैं और अभिजात वर्ग में एप्पल 12 बूथ आदि आती है इसके अंतर्गत साहित्यिक रचनाएं भी आती है

आज भूमण्डलीय करण के दौर में अनेक संस्कृतियों पर विलुप्त होने का संकट द्वा रहा है वही कुमाऊँ की संस्कृति को देखे तो आधुनिकता के प्रभाव से वह अत्यन्त सुदृढ बनती जा रही है या यू कह सकते है कि एक समय ऐसा प्रतीत होने लगा था कि शायद हमारे लोकगीत

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

व वस्त्राभूषण आदि विलुप्तीकरण के कगार पर है लेकिन हमारा यह भय निराधार निकला आज हमारी संस्कृति की पहचान पूरे विश्व मे अपनी पहचान बना रही है।

कुमाऊनी संस्कृति को एक नई पहचान दिलाने में प्रवासी भारतीयों की भूमिका हम हैं जिन्होंने अपनी संस्कृति का परचम विदेश में भी फैलाया इसके अतिरिक्त कुमाऊं में बहुत से ऐसे युटुब हैं है जो अपनी संस्कृति का प्रचार प्रसार करके अपना रोजगार चला रहे हैं

अंत में यही कहा जा सकता है की कुमाऊं की संस्कृति आज विश्व में अपनी एक अलग पहचान बन चुकी है वह चाहे लोकगीत हो लोकनाट्य हो लोकगीत ही क्यों ना हो उसमें भी हमें आधुनिकता का .प्रभाव दिखाई देता हैं जो हमारी संस्कृति के विकास के लिए अति आवश्यक है,

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 04, (Oct-Dec 2024)

संदर्भ सूची

1. प्रो० डी०डी० शर्मा उत्तराखण्ड का लोक जीवन एवम लोक संस्कृति पृ० स० 187
2. प्रो० दिवा भट्ट हिमालय लोक जीवन कुमाऊँ एवम गढ़वाल पृ० स० 8
3. प्रो० दिवा भट्ट उत्तराखण्ड की संस्कृतिक अभिव्यक्तिय पृ० स०
4. प्रो० देव सिंह प्रोखरिया लोक संस्कृति के विविध आयाम (मध्य हिमालय के संदर्भ में) पृ० स०1
5. डॉ० दिनेश चंद्र बलुनी उत्तरांचल संस्कृति लोक जीवन इतिहास एवं पुरातन पृ० स०26
6. डॉ० परवीन निज़ाम अंसारी लोक साहित्य के विविध आयाम पृ० स०26
7. डॉ० राम सनेही लाल शर्मा यायावार संस्कृति और साहित्य संबंधों के अंतः सूत्र पृ० स०20
8. www;//shazom.com
9. http:/pahadiglmpse.com
10. एन० ए ० निकम भरतिय संस्कृति की कुछ अव धारणा पृ० स०18
11. डॉ० शशि पण्डे कुमाउनी संस्कृति एवम् भाषा पृ० स०12
12. प्रो० केशव दत्त रुवाली कुमाउनी भरतिय और संस्कृति पृ० स०108